بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 22.07.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के दौर में इर्तदाद (इस्लाम से विमुखता) के उपद्रव तथा देशद्रोह के समय भिजवाए जाने वाले सैन्य अभियानों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 22 जौलाई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद यमामा के युद्ध के विवरण में इरशाद फ़रमाया कि आज हज़रत अबू बकर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में ईरानियों के विरुद्ध काररवाइयों का बयान होगा-

इस सिलसिले में एक युद्ध जो हुआ उसे ज़ातुल सलासल का युद्ध अथवा काज़मा का युद्ध कहते हैं। यह युद्ध मुहर्रमुलहराम12 हिजरी में हुआ। यह युद्ध तीन नामों से जाना जाता है। ज़ातुल सलासल का युद्ध, काज़मा का युद्ध तथा हफ़ीर का युद्ध। इस युद्ध को ज़ातुल सलासल अर्थात ज़ंजीरों वाली लड़ाई इस लिए कहा जाता है कि अरबी भाषा में सिलसिला ज़ंजीर को कहते हैं जिसका बहुवचन सलासल है, क्यूँकि इस युद्ध में ईरानी सेना ने अपने आपको एक दूसरे के साथ ज़ंजीरों में जकड़ लिया था ताकि कोई व्यक्ति युद्ध से भागने न पाए। इस युद्ध के तीन नाम हैं। मुसलमानों की सेना की संख्या 18 हज़ार तथा सेनापति हज़रत ख़ालिद बिन वलीद थे। जबकि ईरानियों की ओर से वंश एवं प्रतिष्ठा तथा सम्मान में अधिकांश ईरान के लीडरों से बढ़ा हुआ यहाँ के इलाक़े का हाकिम हुर्मुज़ था। ईरानियों की दृष्टि में तो उसकी प्रतिष्ठा माननीय थी किन्तु इराक़ की सीमाओं में निवास करने वाले अरबों में उसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता था क्यूँकि वह उन पर समस्त सीमवर्ती हाकिमों से अधिक कठोरता तथा अत्याचार करता था। ग़ैर मुस्लिम अरबों की घृणा इस सीमा तक पहुंची हुई थी कि वे किसी व्यक्ति की दुष्टता, दुरात्मा तथा दुष्प्रकृति और उपकार भूलने वाले का वर्णन करते हुए हुर्मुज़ का नाम कहावत एंव उदाहरण के रूप में लेने लगे। यमामा से रवानगी से पहले हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीदन ने हुर्मुज़ के नाम पत्र लिखा, पत्र मिलने पर उसने अर्द शेरशाह किसरा को इसकी सूचना दी, अपनी सेनाएँ एकत्र कीं तथा एक तेज़ चलने वाले दल को लेकर तुरन्तु हज़रत ख़ालिद रज़ी. के मुक़ाबले के लिए काज़मा नामक स्थान पर पहुंचा किन्तु उसने इस रास्ते पर आप रज़ी. को न पाया तथा यह सूचना मिली कि मुसलमानों की सेना हफ़ीर नामक स्थान पर एकत्र हो रही है इस लिए

पलट कर हफ़ीर की ओर रवाना हुआ। हुर्मुज़ ने हफ़ीर पहुंचते ही अपनी सेना को सुसंगठित किया, अपने दाएँ बाएँ दो भाईयों क़ुबाज़ तथा अनुशजान को नियुक्त किया तथा ईरानियों ने अपने आपको ज़ंजीरों में जकड़ लिया ताकि कोई भागने न पाए। जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को हुर्मुज़ के हफ़ीर पहुंचने की सूचना मिली तो आप रज़ी. अपनी सेना को लेकर काज़मा की ओर मुड़ गए। इसका पता चलने पर हुर्मुज़ तुरन्त काज़मा की ओर रवाना हुआ तथा वहाँ पड़ाव किया। मुसलमान सेना ने पैदल आगे बढ़ते हुए दुश्मन पर हमला किया, जब दोनों से ओर लड़ाई शुरु हुई तो अल्लाह ने एक बदली भेजी, मुसलमानों की पंक्तियों के पीछे वर्षा हुई जिससे उनको शक्ति मिली।

हुर्मुज़ ने अपने बचाव करने वाले दल से कहा- मैं हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को लड़ने के लिए पुकारता हूँ तथा इस बीच तुम लोग अचानक चुपके से उन पर हमला कर देना। फिर वह स्वयं मैदान में निकला तथा आप रज़ी. को मुक़ाबले के लिए आमंत्रित किया। आप रज़ी. चल कर उसकी ओर आए तथा दोनों में मुक़ाबला हुआ और आप रज़ी. ने हुर्मुज़ को दबोच लिया। इस पर उसके बचाव दल ने दुष्टता से काम लेते हुए आप रज़ी. पर हमला कर दिया तथा घेरे में ले लिया। इसके बावजूद आप रज़ी. ने हुर्मुज़ का काम तमाम कर दिया। हज़रत क़अक़ाअ बिन अमरू ने जैसे ही ईरानियों की यह दुष्टता देखी तो उनके बचाव दल पर हमला कर दिया तथा उन्हें घेरे में लेकर मौत की नींद सुला दिया। ईरानियों को स्पष्ट रूप में पराजय हुई और वे भाग गए, भागने वालों में क़ुबाज़ तथा अनुशजान भी थे। युद्ध की समाप्ति पर जो माले ग़नीमत (युद्ध में विजयी होने पर हाथ आने वाला धन सम्पत्ति) हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में भेजा उसमें से हुर्मुज़ की एक लाख दर्हम मूल्य के हीरे पन्नों से सुसज्जित एक टोपी हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को प्रदान की गई।

फिर अबला के युद्ध का वर्णन है, यह बारह हिजरी में लड़ा गया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. को निर्देश दिया था कि इराक़ में युद्ध का प्रारम्भ अबला नामक स्थान से करें जो ईरान की खाड़ी पर एक सीमावर्ती क्षेत्र था। हिन्दुस्तान तथा सिंध को जो व्यापारिक दल इराक़ से आते थे, सबसे पहले अबला में ठहरते थे। इस पर विजय के विषय में दो रिवायतें बयान की जाती हैं कि मुसलमानों ने इसपर सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ी. के ज़माने में विजय प्राप्त की किन्तु बाद में यह दोबारा ईरानियों के क़ब्ज़े म चला गया तथा हज़रत उमर रज़ी. बिन ख़त्ताब के ज़माने में मुसलमानों ने इस पर पूर्णतः क़ब्ज़ा कर लिया। अतएव अबला के युद्ध का विवरण कुछ यूँ है- सलासल के युद्ध की समाप्ति पर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने हज़रत मुसना को ईरानियों की पराजित सेना का पीछा करने के लिए भेजा तथा साथ ही हज़रत मुअक़्क़ल रज़ी. को अबला भेजा कि वहाँ पहुंच कर माले ग़नीमत जमा कर लें एवं क़ैदियों को बन्दी बना लें। अतः मुअक़्क़ल रज़ी. वहाँ से रवाना होकर अबला पहुंचे और माले ग़नीमत तथा क़ैदी जमा कर लिए। दूसरी रिवायत के अनुसार इस पर विजय हज़रत उमर रज़ी. के ज़माने में हुई।

फिर मज़ार नामक युद्ध है एक, यह बारह हिजरी में लड़ा गया। हुर्मुज़ सलासल के युद्ध में हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद के सामन था, सहायता के लिए लिखने पर वहाँ के राजा ने क़ारिन नामक व्यक्ति के नेतृत्व में एक सेना उसकी सहायता के लिए भेजी परन्तु वह सेना अभी मज़ार नामक स्थान पर ही पहुंची थी कि उसको हुर्मुज़ की पराजय तथा मारे जाने की सूचना मिली तथा साथ ही हुर्मुज़ के पराजित हुए दल

क़ारिन से मज़ार में आ मिले तथा वहाँ उन्होंने युद्ध के इरादे स पड़ाव डाल लिया। क़ारिन ने सबसे आगे चलने वाले दल पर क़ुबाज़ तथा अनुशजान को नियुक्त किया। हज़रत ख़ालिद रज़ी. क़ारिन की सूचना मिलते ही रवाना होकर मज़ार में उसकी सेना के मुक़ाबले पर आए तथा अपनी सेना को पंक्तिबद्ध किया, दोनों पक्षों की अति प्रकोप एवं क्रोध की अवस्था में मुठभेड़ हुई। क़ारिन लड़ने के लिए मैदान में निकला जबकि दूसरी ओर से हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद तथा हज़रत मुअक़्क़ल रज़ी. बिन अशी आगे बढ़े, दोनों उसकी ओर लपके, परन्तु हज़रत मुअक़्क़ल रज़ी. ने आप रज़ी. से पहले क़ारिन को जा लिया तथा उसकी हत्या कर डाली। हज़रत आसिम रज़ी. ने अनुशजान तथा हज़रत अदी रज़ी. ने क़ुबाज़ का वध कर दिया। इन तीनों सरदारों के मारे जाने से ईरानी साहस खो बैठे तथा मैदान छोड़ कर भागने लगे। इस युद्ध में फ़ारस वालों की बहुत बड़ी संख्या मारी गई।

वल्जा का युद्ध, कस्कर के निकट तटीय क्षेत्र में सिफ़र 12 हिजरी में हुआ। ईरानी शासन ने ईरान के ईसाई निवासियों के एक विराट क़बीले बकर बिन वायल के मुख्य लोगों को ईरान के दरबार में बुलाया तथा मुसलमानों के विरुद्ध तय्यार करके एक सेना को संगठित किया तथा उसका नेतृत्व एक प्रसिद्ध घुड़सवार अंज़र ज़ग़र के हाथ में दिया तथा यह सना वल्जा की ओर रवाना हो गई। हैरा व कस्कर के आस पास के इलाक़े के लोग तथा किसान भी उस सेना के साथ मिल गए। फ़ासी सेना के वल्जा में जमा होने की सूचना मिलने पर हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने उचित समझा कि इन पर तीन दिशाओं से हमला करें ताकि उनकी एकता बिखर जाए तथा इस प्रकार सहसा हमले से शत्रु दुविधा में पड़ जाए। आप रज़ी. अपनी सेना को लेकर वल्जा की ओर आगे बढ़े तथा शत्रु की सेना एवं उसकी सहयोगी जमाअतों के मुक़ाबले पर उतरे, घोर युद्ध हुआ। आप रज़ी. ने सेना के दोनों ओर मुजाहिदों के द्वारा घात लगा रखी थी, अंततः घात लगाए हुए दलों ने दोनों दिशाओं से शत्रु पर हमला किया, ईरानियों की सेनाएँ पराजित होकर भागीं किन्तु आप रज़ी. के सामने से घात लगाए हुए दोनों दलों ने पीछे से उनको ऐसा घेरा कि वे बोखला गए, यहाँ तक कि किसी को अपने साथी के मारे जाने की चिंता भी न रही, दुश्मन सेना का सेनापति हज़ीमत पराजित होकर अंततः मारा गया। किसानों के साथ हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने वही व्यवहार किया जो उनका तरीक़ा था, अर्थात उनमें से किसी का वध नहीं किया, केवल लड़ने वाले लोगों की संतान तथा उनके सहयोगियों को पकड़ लिया तथा देश के साधारण वासियों का जिज़्या देने तथा ज़िमी (इस्लामी शासन में ग़ैर मुस्लिम नागरिक) बन जाने की दावत दी जिसको उन लोगों ने स्वीकार कर लिया।

उल्लैस का युद्ध सिफ़र 12 हिजरी में हुआ। घोर युद्धों की पृष्ठभूमि में बयान हुआ है कि हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने भौतिक सुविधाई को पूरा न देख कर बड़ी विनम्रता से हाथ उठाकर दुआ मांगी तथा निवेदन किया कि ऐ अल्लाह! यदि तू मुझे दुश्मनों पर ग़ल्बः अता फ़रमाएगा तो मैं किसी एक दुश्मन को भी जीवित नहीं छोडूंगा तथा यह नदी उनके ख़ून से लाल हा जाएगी। इसके बाद आप रज़ी. ने युद्ध की चाल चलते हुए सेना को दाईं तथा बाईं दिशा से ईरानी सेना के पीछे से हमला करने का आदेश दिया, जिससे ईरान की सेना तितर बितर हो गई। आप रज़ी. ने आदेश दिया कि शत्रु को पकड़ कर बन्दी बना लो तथा मुक़ाबला करने वालों के अतिरिक्त किसी की हत्या न करो।

क़ैदियों की हत्या करके ख़ून को नहर में फेंकने का स्पष्टीकरण-

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने बयान फ़रमाया- इतिहासकार तबरी तथा अधिकांश सीरत के लिखने वालों ने वर्णन किया है कि हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने अपनी दुआ में जो एहद किया था उसके अनुसार एक दिन तथा एक रात इन क़ैदियों का वध करके नहर में डाला गया ताकि उसका पानी ख़ून से लाल हो जाए तथा इस कारण से यह नहर आजतक नहरुद्दम (रक्त वाली नहर) के नाम से प्रसिद्ध है। इस्लामी युद्धों विशेषतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक दौर तथा ख़िलाफ़ते राशिदः के दौर में वास्तव में ऐसा हुआ भी नहीं कि क़ैदियों को इस प्रकार मारा गया हो, निःसन्देह इन युद्धों में लाखों हज़ारों तक हताहत होने वालों की संख्या मिलती है किन्तु ये सब वे थे जो युद्ध करने की अवस्था में मारे गए। अतः कहा जा सकता है कि ऐसी घटनाओं को बढ़ा चढ़ा कर बयान करना भी एक सीमा तक शामिल हो गया जिसके कारण इस्लामी युद्धों और हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद की ज़ात पर तुच्छ हमले करने वालों को अवसर मिले अथवा युद्धों में मुसलमानों पर बर्बरता अपनाने का आरोप लगाया गया, अतएव अल्लाह ही ठीक ठीक जानता है किन्तु प्रत्यक्षतः यही लगता है कि केवल आरोप है।

अमग़ीशियः की विजय के बारे में लिखा है कि अमग़ीशियः इराक़ में एक स्थान है इसको अल्लाह तआला ने 12 हिजरी में बिना लड़ाई किए ही विजय करा दिया था। जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद उल्लैस की विजय से निपट लिए तो आप रज़ी. ने तय्यारी की और अमग़ीशियः आए। परन्तु आप रज़ी. के आने से पहले ही वहाँ के निवासी बस्ती छोड़ कर सुवाद में फैल गए। मुसलमानों को अमग़ीशियः से इतना अधिक माले ग़नीमत मिला कि ज़ातुल सलासल से लेकर अब तक किसी युद्ध से भी प्राप्त न हुआ था।

उल्लैस तथा अमग़ीशियः पर विजय की शुभसूचना हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में बनू अजल के एक जंदल नामक व्यक्ति के द्वारा भिजवाई जो कि एक बहादुर गाईड के तौर पर विख्यात थे। उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में पहुंच कर उल्लैस पर विजय की ख़ुशख़बरी, माले ग़नीमत का विवरण, बन्दियों की संख्या, ख़ुम्स (युद्ध से प्राप्त सम्पत्ति का पांचवाँ भाग) में जो चीज़ें हाथ आईं तथा जिन लोगों ने विशेष कारनामे किए, उन सबका विवरण तथा विशेषतः हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद की दलेरी क कारनामे अत्यंत सुन्दर रंग में बयान किए। आप रज़ी. को उनकी बहादुरी, दृढ़ संकल्प तथा विजय की सूचना सुनाने का यह अंदाज़ बड़ा पसन्द आया। आप रज़ी. ने उन्हें क़ैदियों में से एक सेविका देने का आदेश दिया जिससे उनकी संतान पैदा हुई। इसी तरह आप रज़ी. ने इस अवसर पर फ़रमाया- अब महिलाएँ हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद जैसा व्यक्ति पैदा नहीं कर सकेंगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔